Rann [Hindi]

Medha Mathur, MD

Assistant Professor, Community Medicine, GMCH, Udaipur, Rajasthan

Corresponding Author:
Dr Medha Mathur
A/G-4, A block, Geetanjali Medical College & Hospital,
Geetanjali Medicity, Udaipur-313001, Rajasthan.
Email: drmedhamathur at gmail dot com

Submitted: 5-May-2020 Accepted: 9-May-2020 Published: 10-May-2020

सब को निरोग का वरदान दे कर खुद को करती कैद हूँ
कुरुक्षेत्र में कृष्ण के जैसे सारथि बन मुस्तैद हूँ

इस युद्धभूमि में जीवन और मृत्यु के बीच खड़ी हूँ
कोमलांगी मैं, पर कर्तव्यनिष्ठ सी अड़ी हूँ

अपने प्यारों से दूर हूँ पर साथ रहती हूँ
'सब ठीक हो जायेगा' आशा भरे शब्द कहती हूँ

नम हो जाती हैं आँखें जब 'दिल के टुकड़ों' को छू नहीं पाती हूँ
अपना वात्सल्य, अपनी पीड़ा फिर भी छुपाती हूँ

गृहणी, अन्नपूर्णा, माँ, दुलारी और भक्ति मेरे ही रूप हैं
शक्ति, अग्नि और जगत जननी मेरे ही स्वरुप हैं

विजय निश्चित है, रोम रोम में द्रण निश्चय मेरे है
एक रण बाहर और एक रण अन्दर मेरे है

एक रण बाहर और एक रण अन्दर मेरे है...

Cite this article as: Mathur M. Rann [Hindi]. RHiME. 2020;7:94.